आधुनिक हिन्दी साहित्य और नवजागरण चेतना।

स्नातक भाग 2
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
पंचम पत्र

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने पुनर्जागरण के दो चिह्नों की चर्चा की है - एक - दो विसदृश्य संस्कृति की टकराहट और दूसरा मनुष्य के समग्र और संश्लिष्ट रूप की खोज। दो विसदृश्य संस्कृति की टकराहट का सम्बन्ध सांस्कृतिक-आस्मिता की तलाश से जुड़ता है और सांस्कृतिक आस्मिता की यह तलाश सांस्कृतिक संकट की पृष्ठभूमि में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के सांस्कृतिक स्तर पर ~~प्रतिशोध के~~ प्रतिरोध का रूप धारण कर लेती है। इस तलाश के

भारतेंदु युग से लेकर छायावाद तक अभिव्यक्ति मिली है। इस क्रम में नवजागरण का जो स्वरूप उभरकर सामने आता है, वह स्थिर न होकर समय और परिस्थितियों के सापेक्ष विकसनशील है। जहाँ भारतेंदुयुगीन नवजागरण-चेतना का स्वरूप अंत-विरोधमूलक है, वहीं द्विवेदीयुगीन नवजागरण-चेतना इन अंतर्विरोधों से बाहर निकलने की कोशिश करती है। इस क्रम में उसका संबंध नवजागरण के आधुनिक चिंतन से जुड़ा। छायावाद में आकर सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश अपने उत्कर्ष पर पहुँचती है। यही कारण है कि नामवर सिंह ने छायावाद को परिभाषित करते हुए कहा है कि छायावाद उस सांस्कृतिक जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जिसकी शुरुआत 19वीं शताब्दी में होती है।

पहली बार नवजागरण-चेतना को समग्रता में अभिव्यक्ति छायावाद में ही मिली। चतुर्वेदी जी ने मनुष्य के समग्र एवं संश्लिष्ट रूप की जिस खोज से नवजागरण चेतना के अन्तर्संबंध को स्थापित किया है, उस खोज का संबंध आधुनिकता और आधुनिक चिंतन से जुड़ता है। समष्टि और व्यष्टि के जिस द्वैत की पृष्ठभूमि में उस खोज की शुरुआत छायावाद से होती है, वह प्रगतिवाद और प्रयोगवाद से होते हुए नयी कविता में अज्ञेय और मुक्तिबोध के यहाँ मुकम्मल रूप ग्रहण करती है। यहाँ व्यष्टि और समष्टि के बीच एक सार्थक समीकरण स्थापित होता है। यह सार्थक समीकरण एक साथ व्यक्ति और समाज दोनों के लिए उपादेय है।

(2)

स्पष्टतः आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य का संबंध जिस यथार्थवादी चेतना से जुड़ता है उसे यथार्थवादी चेतना का एक आयाम यदि सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश से जुड़कर राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्ति देता है, तो दूसरा आयाम नवजागरण की आधुनिकता और वैज्ञानिकता से जुड़कर अपने उत्कर्ष को प्राप्त करता है। सिर्फ संवेदना ही नहीं, वरन् शिल्प के धरातल पर भी यह नवजागरण हिन्दी साहित्य के स्वरूप के निर्धारण में अहम भूमिका निभाता है। हिन्दी साहित्य में नवजागरण के आविर्भाव के साथ ही गद्य का आविर्भाव होता है। आरंभ में नवजागरण की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना और प्रगतिशील चेतना को गद्य में अभिव्यक्ति मिली है।

यही कारण है कि इस युग में नाटक प्रहसन, निबंध, आलोचना, इतिहास, उपन्यास और कहानी आदि के आगमन के साथ हिन्दी साहित्य को स्वरूपगत विविधता मिलती है। इनमें भी इस दौर के रचनाकारों का जोर नाटक और प्रहसन के लेखन एवं मंचन पर विशेष रूप से रहा। यही इस युग की प्रगतिशील चेतना का वाहक बनी और इसे अभिव्यक्ति देने के लिए ब्रजभाषा के विकल्प के रूप में खड़ीबोली हिन्दी को अपनाया गया। यही कारण है कि गद्य का आविर्भाव और खड़ीबोली हिन्दी का आगमन हिन्दी साहित्य में नवजागरण की विशिष्ट पहचान है।